ओम शान्ति मधुबन दिनांक: 30.9.09

शान्तिवन में आयोजित मीडिया महासम्मेलन की संक्षित रिपोर्ट
विषय: शान्ति एवं विकास के लिए आध्यात्मिकता-मीडिया की भूमिका

दिनांक: 11 से 15 सितम्बर, 2009 स्थान: ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन (आबू रोड)

बेहतर विश्व की परिकल्पना को साकार करने की पहल में एक कड़ी जोड़ते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्था के राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के मीडिया प्रभाग द्वारा ब्रह्माकुमारीज संस्था के शान्तिवन परिसर में **'शान्ति एवं विकास के लिए आध्यात्मिकता-मीडिया की भूमिका'** विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस महासम्मेलन में भारत सहित नेपाल से प्रिन्ट, इलेक्ट्रानिक तथा सायबर मीडिया से जुड़े 1500 मीडियाकर्मियों ने हिस्सा लिया। यह महासम्मेलन आठ खुले सत्रों, चार समूह चर्चाओं, चार समानान्तर कार्यशालाओं तथा ध्यान योग सत्रों में सम्पन्न हुआ।

स्वागत सत्र : दिनांक: 11 सितम्बर, 2009 को सायं 6 बजे आयोजित स्वागत सत्र को सम्बोधित करते हुए मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक **ब्र. कु. आत्म प्रकाश** ने कहा कि भागदौड़ की जिन्दगी से थोड़ा वक्त निकालकर अपने तथा परिवार के बारे में सोचने का सुवअवसर प्रदान हुआ है। जरूरत है कि हम अपने व्यवसाय में कार्य करते हुए सुख स्वरूप जीवन व्यतीत कर सके। ब्रह्माकुमारीज संस्था गुजरात जोन की जोनल इंचार्ज अहमदाबाद की **राजयोगिनी ब्र. कु. सरला** ने कहा कि हमारी लेखनी सदैव सकारात्मक बनी रहे । इसके लिए हमें अपने मानसिक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सकारात्मक ऊर्जा को अपनाना चाहिए।

सुरक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक **ब्र. कु. अशोक** ने संस्था की गतिविधियों से अवगत कराते हुए कहा कि यहाँ से पूरे विश्व में संस्था द्वारा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए निरन्तर प्रयास किया जा रहा है और इस महासम्मेलन का आयोजन भी उसी कड़ी का हिस्सा है। मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक, दिल्ली के **ब्र. कु. सुशान्त** ने कहा कि हमारा मकसद सभी के अन्दर शुद्ध एवं सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह करना है। आज मीडिया द्वारा स्वार्थ परक पत्रकारिता की जा रही है। इसका सीधा असर मीडिया में साफ देखने को मिलता है। खेलकूद प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी **ब्र. कु. शशि** ने आत्मा और परमात्मा का विस्तृत विश्लेषण करते हुए कहा कि हमारी ऊर्जा सदा बनी रहे इसके लिए स्वयं की पहिचान करते हुए परमात्मा के साथ सदा जुटे रहने की आवश्यकता है। इसके पश्चात उन्होंने उपस्थित मीडियाकर्मियों को ईश्वरानुभूति करायी। कार्यक्रम का संचालन मीडिया प्रभाग की जोनल कोआर्डिनेटर जयपुर की **ब्र. कु. चन्द्रकला** ने किया।

उदघाटन सत्र: दिनांक 12 सितम्बर, 2009 को प्रात: 10 बजे सम्मेलन सभागार में **'शांति एवं विकास के लिए आध्यात्मिकता-मीडिया की भूमिका'** विषय पर सम्मेलन का दीप जलाकर शुभारम्भ किया गया। दीप प्रज्वलन के पश्चात सभा को सम्बोधित करते हुए **राजस्थान के सूचना एवं जनसम्पर्क राज्यमंत्री अशोक बैरवा** ने कहा कि नकारात्मकता का दंश झेल रही मानवता को राहत प्रदान करने के लिए मीडियाकर्मियों को आध्यात्मिकता के परिवेश से जुड़कर सामाजिक बदलाव का नया अध्याय लिखने का संकल्प लेना चाहिए।

आगे उन्होंने कहा कि अपराध समाचारों को जरूरत से ज्यादा महत्व देना सकारात्मक सोच को दुष्प्रभावित करता है। बुरे कार्य करने वालों को अनावश्यक रूप से प्रतिबिम्बित करने के बजाए समाज को नयी दिशा देने में प्रयासरत संस्थाओं व व्यक्तियों को समारपत्रों में अधिक स्थान दिया जाना चाहिए। उपग्रह टीवी चैनलों द्वारा व्यवसायिकता की अंधी होड़ के कारण फैलायी जा रही अपसंस्कृति के प्रति सचेत करते हए बैरवा ने चेतावनी दी कि जिस देश की संस्कृति विकृत हो जाती है, उसके लिए अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल हो जायेगा। पत्रकारों को अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए देश के नव निर्माण और भारतीय संस्कृति के उत्थान हेतु ब्रह्माकुमारीज द्वारा शुरू किये गये अभियान से जुड़कर अहम भूमिका निभानी चाहिए। **गुजरात के शहरी विकास एवं आवास मंत्री नितीन भाई पटेल** ने कहा कि मीडिया की भूमिका दिन-प्रतिदिन महत्वपूर्ण होती जा रही है। लेकिन हमारा दुर्भाग्य यह भी कि कई टीवी चैनलों विकारों को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रम अधिक प्रसारित करने वाले कार्यक्रम अधिक प्रसारित कर रहे हैं।

संस्था के महासचिव **ब्र. कु. निर्वेर** ने कहा कि आध्यात्मिकता रहित जीवन नीरस है। जीवन को संतुलित बनाने के लिए सकारात्मक सोच विकसित की जानी चाहिए। नकारात्मकता को अपने जीवन एवं समाज से समाप्त करके पत्रकार देश को उन्हें सोने की चिड़िया बनाने का सपना साकार कर सकते हैं। मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष **ब्र. कु. ओम प्रकाश** ने कहा वैज्ञानिक प्रगति ने सुविधायें एवं साधन दिये जिनसे देश का विकास तो हुआ लेकिन सर्वांगिण विकास नहीं हो पाया आज के वातावरण में आध्यात्मिक विकास का महत्व सर्वोपरि है और इस पावन लक्ष्य को प्राप्त करने में मीडियाकर्मी सहभागी बन सकते हैं।

मीडिया प्रभाग के उपाध्यक्ष **ब्र. कु. करूणा** ने कहा कि दादी प्रकाशमणि की प्रेरणा से शांति, प्रेम, सदभाव और अध्यात्म की अनुभूति कराने के लिए प्रतिवर्ष मीडियाकर्मियों को शांतिवन में आमंत्रित करने के लिए जो पौधा रोपित किया गया वह अब वटवृक्ष का रूप धारण कर रहा है। भुवनेश्वर के विधायक **अशोक पण्डा** ने कहा कि मीडियाकर्मी नकरात्मक सोच को त्यागकर जनसमस्याओं के समाधान पर यदि ज्यादा ध्यान केन्द्रित करें तो शांतिवन में महासम्मेलन आयोजित करने का अभिप्राय सार्थक हो जायेगा।

आंध्र प्रदेश के पूर्व सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक हैदराबाद के **डा. सी. वी नरसिम्हा रेडडी** ने कहा कि बापू गांधी ने शांति व अहिंसा के बलबूते देश को आजाद करा लिया उनकी शिक्षायें आज भी भारत को नयी दिशा प्रदान करने में सक्षम है। रजयोग शिविर की निदेशिका माउण्ट आबू की **ब्र. कु. शीलू** ने आत्मा और परमात्मा की व्याख्या करते हुए ईशरानुभूति करायी। कार्यक्रम का संचालन ज्ञान सरोवर माउण्ट आबू की राजयोग शिक्षिका **ब्र. कु. गीता** ने किया।

समानान्तर कार्यशालायें : दिनांक 12 सितम्बर, 2009 को सायं 3 से 5 बजे तक **'मीडिया शांतिदूत की भूमिका में'** विषय पर चार समानान्तर कार्यशालायें आयोजित की गयी।

प्रथम कार्यशाला : इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में ज्ञानामृत की संपादिक शान्तिवन की **ब्र. कु. उर्मिला**, वक्ता के रूप में समय सृजन टाईम्स की मुख्य संपादक दिल्ली की **उषा शर्मा**, चूजी 49 पाक्षिक पत्रिका, दिल्ली के **नारायण मूर्ति**, सम्पादक सोसायटी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अहमदाबाद के **महेश भाई देसाई** तथा अध्यक्ष के रूप में मौजूद थे माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्व विद्यालय भोपाल के पी आर और एडवटाईज के फैकल्टी **प्रो. कृष्ण चन्द मौलि**। कार्यक्रम का संचालन मीडिया प्रभाग की सब-जोनल कोआर्डिनेटर सूरत की **ब्र. कु. फाल्गुनी** ने किया। *इस कार्यशाला में चर्चा करते हुए वक्ताओं ने यह स्वीकार कि हाल के दौर में नकारात्मकता की पीड़ा झेल रहे समाज को शांति एवं सुख सम्बन्धी कन्टेन्ट का देना आवश्यक हो गया है। मीडिया को अब शांतिदूत की भूमिका में प्रमुखता से आना चाहिए क्योंकि मनुष्य की प्रवृत्तियां दिन-प्रतिदन विध्वंसक होती जा रही है। हमें अपने दायित्वों को स्वीकारते हुए इसे समाजोपयोगी बनाने की आवश्यकता है।*

द्वितीय कार्यशाला : दूसरे कार्यशाला के अध्यक्ष थे मीडिया प्रभाग के जोनल कोआर्डिनेटर अहमदाबाद के **डा. ब्र. कु. कालिदास,** मुख्य वक्ता के रूप में नार्थ गुजरात विश्वविद्यालय पाटन के पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष **डा. मनोज लोढ़ा,** वक्ता के रूप में आल इंडिया रेडियो, दिल्ली के समाचार सम्पादक **राजेन्द्र उपाध्याय,** समाज सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक **ब्र. कु. अवतार**, भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ जयपुर के महासचिव **डा. बी. एल. जालान**, मध्यम तथा छोटे समाचारपत्र समूह के अध्यक्ष कानपुर के **के. डी चन्डोला,** नटखट राजविराज नेपाल के वरिष्ठ सम्पादक **सुखराम यादव** तथा कार्यक्रम का संचालन मीडिया सेन्टर के कोआर्डिनेटर पाटन की **ब्र. कु. नीता** ने किया। *इस कार्यशाला में सभी वक्ताओं ने दिन-प्रतिदिन सूचना तंत्र के जंजाल से निकलती हुई सूचनाओं के प्रवाह में सर्तकता बरतने की अपील की। उसमें यह कहा गया कि सूचनाओं का सृजन करते समय पाठक और श्रोता के भावनाओं का ध्यान रखा जाना चाहिए। युवाओं की भ्रामक स्थिति इसका गम्भीर नतीजा है।*

तृतीय कार्यशाला : इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता थे वरिष्ठ पत्रकार तथा मूल्यनिष्ठ शिक्षा के कोआर्डिनेटर, माउण्ट आबू के **ब्र. कु. गिरीश,** वक्ता के रूप में डेली रखेवाल डीसा के सम्पादक **तरूण सेठ**, विजन टू मीडिया ग्रुप के अध्यक्ष दिल्ली के **रमेश शाह**, आल इंडिया रेडियो अहमदाबाद के समाचार सम्पादक **अजय इन्दरेकर**, चरैय्याबाती हिन्दी पाक्षिक पत्रिका के सम्पादक भोपाल के सम्पादक **जयकृष्ण गौड़,** कार्यक्रम की अध्यक्षता किया ओम शांति चैनल की निदेशिका **ब्र. कु. प्रभा** ने तथा कार्यक्रम का संचालन मीडिया प्रभाग की कार्यकारी सदस्य चण्डीगढ़ की **ब्र. कु. पूनम** ने किया। *पत्रकारिता के व्यवसायीकरण पर सभी वक्ताओं ने चिन्ता जताते हुए कहा कि पत्रकारिता का व्यवसायीकरण उतना दुखद नहीं जितना समाचारों का व्यवसायीकरण दुखद हो गया है। पिछले बीते विधानसभा चुनावों में समाचारपत्रों की कार्यप्रणाली पर सभी ने कहा कि जिस तरह से चुनावों के दौरान खबरों का व्यवासायीकरण हुआ है उससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर दावं लग गया है। इससे मैदान में कार्य करने वाले पत्रकारों के लिए अपनी साख बचा पाना भी मुश्किल हो गया है।*

चतुर्थ कार्यशाला : इस कार्यशाला में अध्यक्ष के रूप में मुल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति के राष्ट्रीय समन्वयक **प्रो. कमल दीक्षित,** मुख्य वक्ता के रूप में ग्लोबल राजयोग रिट्रीट सेन्टर पूरी की निदेशिका राजयोगिनी **डॉ. ब्र. कु. निरूपमा** तथा वक्ता थे चीखता भारत लखीमपुर खीरी के प्रधान सम्पादक **डा. एस. एन. शुक्ला**, समाचार वार्ता के लखनऊ के सम्पादक **श्याम कुमार**, गुजरात प्रेस अकादमी के पूर्व सचिव गांधीनगर के **के. एम डामोर**, खोजी नजर रूद्रपुर के सम्पादक **बी. सी. सिंघल** कार्यक्रम का संचालन ज्ञान सरोवर की फैकल्टी **ब्र. कु. सुमन** ने किया। *इसमें सभी वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि अब वक्त आ गया है कि मीडियाकर्मियों को अपने अर्न्तात्मा की आवाज सुनकर अपने दायित्वों का निर्वहन करना चाहिए। जब मीडियाकर्मी शांतिदूत की भूमिका में होंगे तभी वे सही मायने में समाज के प्रहरी और समाज निर्माता कहे जायेंगे। यह जरुर है कि वर्तमान समय में पत्रकारिता का स्वरूप बदल गया है और पत्रकारिता को एक व्यवसाय के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है।*

तनावमुक्त सत्र : दिनांक: 12 सितम्बर, 2009 को सायं 5.30 से 7 बजे तक तनावमुक्त सत्र का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित मीडियकर्मियों को रेडियो आनकालोजिस्ट **डा. प्रेम मसंद** ने तनाव होने के कारण तथा उससे निजात दिलाने सम्बन्धी बातों पर सुझाव दिये।

अन्तर्दर्शन सत्र : 12 सितम्बर, 2009 को सायं 7.00 से 8.00 बजे तक शान्ति की शक्ति विषय पर गहरी व्याख्या करते हुए संस्था के महासचिव राजयोगी **ब्र. कु. निर्वेर** ने उपस्थित मीडियाकर्मियों को गहन ईश्वरानुभूति करायी।

खुला सत्र: दिनांक सितम्बर को प्रात: 9.30 बजे से **'प्रेस की स्वतंत्रता और इसके सामाजिक उत्तरदायित्व'** विषय पर खुले सत्र का आयोजन किया गया। सत्र को सम्बोधित करते हुए महामेधा के स्थानीय सम्पादक भोपाल के **मधुकर द्विवेदी** ने कहा कि माचिस दीप जलाने और रोशनी फैलाने के लिए बनायी गयी थी परन्तु उसका दुरूपयोग आशियाने जलाने और साम्प्रदायिक दंगों

की आग भड़काने के लिए किया जा रहा है। कमोवेश प्रेस की आजादी का भी इसी प्रकार दुरूपयोग हो रहा है। स्थिति यहाँ तक बिगड़ गयी है कि मीडियाकर्मी अपने ही बाल नोचने और बिगड़ सूरत दिखाने वाला दर्पण नष्ट करने पर उतारू हो रहे हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष **डा. संजीव भानावत** ने कहा कि यह खेद का विषय है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का संवैधानिक अधिकार प्राप्त करने के बावजूद आजादी के 62 साल बाद हमें अपने सामाजिक सरोकारों व दायित्वों पर निरन्तर चर्चा करनी पड़ रही है। सही अर्थो में अभिव्यक्ति की आजादी अब उन लोगों के पास रह गयी जो समाचारपत्रों में स्पेस और इलेक्ट्रानिक मीडिया में समय खरीदने का सामर्थ्य रखते हैं। मुल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति के राष्ट्रीय संयोजक भोपाल के **प्रो. कमल दीक्षित** ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि सम्पादक की सत्ता पर सबसे तीखा प्रहार हो रहा है बिगड़ते स्वरूप में हमें सम्पादक की इस सत्ता की रक्षा करने के लिए गहन चिंतन के आधार पर ठोस कदम उठाने होंगे।

जयपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के सूचना संचार निदेशक **प्रो. प्रदीप माथुर** ने कहा कि शब्द की सत्ता को बचाने की महती आवश्यकता है। बाजारवाद की संस्कृति की प्रफुल्लित होने के कारण तकनीकी इतनी ताकतवर हो गयी कि वह मीडिया के मूल स्वरूप को निगलने जा रही है। प्राईम प्वाइंट चेन्नई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी **के. श्रीनिवासन** ने कहा कि शान्तिवन में देशभर से आये पत्रकारों को प्रेस की आजादी का दुरूपयोग रोकने व सकारात्मक एवं जनहित से जुड़ी पत्रकारिता का प्रसार करने के लिए आगे आना चाहिए। हैदराबादा के वरिष्ठ पत्रकार **सीताराम राजू** ने पत्रकारों का आह्वान किया कि कर्म व धर्म को ईमानदारी से निभायें तथा संतुलित पत्रकारिता के आदर्श स्थापित करें।

ब्रह्माकुमारीज संस्था के कार्यकारी सचिव **ब्र. कु. मृत्युंजय** ने कहा कि अधिकारों की बात करने वाले अपने कर्त्तव्यों को भी पहिचाने। पत्रकारिता का लक्ष्य समाज में शांति व सदभाव बनाये रखते हुए देश को विकास की ओर ले जाना है कलम की ताकत का सदुपयोग करें, समाज को सही दिशा प्रदान करें। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को मीडिया प्रभाग की जोनल कोआर्डिनेटर जबलपुर की **ब्र. कु. विमला** ने ईश्वरानुभूति करायी तथा मीडिया प्रभाग की संयुक्त जोनल कोआर्डिनेटर अहमदाबाद की **ब्र. कु. नन्दिनी** ने कार्यक्रम का संचालन किया।

फेस टू फेस टॉक शो: दिनांक 13 सितम्बर, 2009 को प्रात: 11.30 बजे से दोपहर 01.00 बजे तक **'मीडिया में स्वनियंत्रण-आध्यात्मिकता की भूमिका'** विषय पर फेस टू फेस टॉक शो का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम खुले प्रश्न मंच के लिए पैनेलिस्ट के रूप में मीडिया प्रभाग की सब जोनल कोआर्डिनेटर बड़ौदा की **ब्र. कु. डा. निरंजना**, सेन्टर फार मीडिया स्टडीज एकेडेमी दिल्ली के प्रोफेसर एवं डीन **डा. ओम गुप्ता**, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय पी आर और एडवर्टाइज के फैकल्टी **प्रो. के. सी मौलि**, चरैय्याबाती इंदौर के सम्पादक **जयकृष्ण गौड़**, सिम्बोसिस इन्स्टीटयूट ऑफ मीडिया एण्ड कम्यूनिकेशन पुणे के फैकल्टी **प्रो. अनन्य मेहता**, छोटे एवं मझोले समाचारपत्र संघ के अध्यक्ष **के. डी. चन्डोला**, पूर्व सांसद तथा चौथी दुनियां के सम्पादक दिल्ली के **संतोष भारतीय** मौजूद थे। इस कार्यक्रम का संयुक्त रूप से संचालन मीडिया प्रभाग की कार्यकारी सदस्य दिल्ली की **ब्र. कु. उर्मिल** तथा जामिया मीलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय जनसंचार विभाग के सहायक प्रोफेसर दिल्ली के **डा. सुरेश वर्मा** ने किया।

कार्यक्रम के दौरान सभा में उपस्थित मीडियाकर्मियों ने स्वनियमन के सम्बन्ध अनेक सवाल किये जिसका पैनेलिस्टों ने जबाब देते हुए कहा कि मीडिया की स्वतंत्रता और उसकी अभिव्यक्ति को हस्तक्षेप करना मीडिया के पर कतरने के बराबर है परन्तु मीडिया की आजादी का दुरूपयोग न हो इसके लिए मीडियाकर्मियों को आत्मावलोकन कर स्वयं नियम नीति निर्धारण करने की आवश्यकता है।

समूह डायलॉग : दिनांक 13 सितम्बर को अपरान्ह 3.00 से 4.30 बजे तक प्रिन्ट, इलेक्ट्रानिक, सायबर मीडियाकर्मियों के लिए बेहतर समाज की स्थापना के लिए सकारात्मक एवं सजग मीडिया की भूमिका विषय पर समूह डॉयलॉग का आयोजन किया गया।

समूह चर्चा प्रथम : प्रिन्ट मीडिया के लिए आयोजित इस डायलॉग में वक्ता के रूप में हैदराबाद प्रेस क्लब के उपाध्यक्ष **अन्जनेयुलु**, लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार अहमदाबाद के **चिरंतन ब्रह्मचारी,** स्वतंत्र पत्रकार करीमनगर के **वाई एस. शर्मा**, प्रोग्रेसिव पत्रकार संघ के अध्यक्ष डांग, नेपाल के **शशिधर भण्डारी**, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर के पत्रकारिता विभाग के सहायक प्रोफेसर **कमलेश मीना** तथा अध्यक्ष के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष **डा. संजीव भानावत मौजूद** थे। इस कार्यशाला का संचालन मीडिया प्रभाग के कार्यकारी सदस्य डीसा के **ब्र. कु. शशिकान्त** ने किया। *इसमें चर्चा के दौरान सभी ने यह स्वीकार किया कि एक सजग और सकारात्मक सोच रखने वाला खबरनवीश ही श्रेष्ठ समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकता है। जब तक उसकी कलम में सकारात्मकता और सजगता नहीं होगी तब तक वह कुछ भी हासिल नहीं कर सकता।*

समूह चर्चा द्वितीय : इलेक्ट्रानिक मीडियाकर्मियों के लिए आयोजित दूसरे समूह चर्चा में अध्यक्ष थे फिल्म प्रोड्यूसर गुवाहाटी के **चिन्मय शर्मा,** वक्ता के रूप में जामिया मीलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय दिल्ली के जनसंचार के प्रोफेसर **डा. सुरेश शर्मा,** आल इंडिया रेडियो के सहायक स्टेशन कटक के निदेशक **सुरेश चन्द्र नायक,** आल इंडिया रेडियो विविध भारती हैदराबाद के निदेशक **बाबू राव,** सिन्धुदर्शन इन्फोटेनमेन्ट के प्रबन्ध निदेशक मुम्बई के **हीरू लेखराज थारीयानी**, सीएनएन-आईबीएन के विशेष

संवाददाता उदयपुर के **हेमेन्द्र श्रीमाली**, एनडीटीवी दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार **संजोग गुप्ता,** स्वर्गाद्वारी रेडियो दांग नेपाल के समाचार प्रमुख **बिपुल पोखरेल** उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मीडिया प्रभाग की कार्यकारी सदस्य दिल्ली की **ब्र. कु. अदिती** ने किया। *इसमें इलेक्ट्रानिक मीडिया पर सीधे प्रहार करते हुए कहा गया कि जब से इलेक्ट्रानिक मीडिया का आगमन हुआ है हमारे परिवारों से तथा समाज से मूल्य तिरोहित होते जा रहे हैं। तेजी से बढ़ता फैशन, अश्लीलता ने इसे आग में घी डालने का काम किया है। जितना इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ना चाहिए उसके बदले इसके नकारात्मकता के दंश ने समाज में नैतिकता के पतन की आंधी प्रारम्भ कर दी है।*

समूह चर्चा तृतीय : सायबर मीडियाकर्मियों के लिए आयोजित समूह चर्चा में अध्यक्ष थे सेटल यूएसए के कम्प्यूटर वैज्ञानिक **डा. सूर्या श्रीपदा,** वक्ता के रूप में वेब कन्टेन्ट लेखक दिल्ली की **नितिमा,** चेन्नई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी **के. श्रीनिवासन,** तीर्थकार महावीर विश्वविद्यालय मैनेजमेण्ट लॉ की सहायक प्रोफेसर मुरादाबाद की **डा. निधि सक्सेना** उपस्थित थी। कार्यक्रम का संचालन आईटी कन्सल्टेन्ट बैंगलौर के **ब्र. कु. गिरीश** ने किया। इसमें साइबर मीडिया के बढ़ते जाल में उलझते किशोरो के बचपन को चिंता विषय बताया गया। पूरे विश्व से सेकेण्डों में जोड़ने वाले इस तीव्रगामी सूचना तंत्र को वर्तमान समय का वरदान के साथ अभिशाप भी कहा गया। सभी ने कहा कि जिस तेजी से इसका प्रचलन बढ़ा है निश्चित तौर पर उससे समाज के लोगों में जागृति आयी है।

चतुर्थ समूह चर्चा: समूह डायलाग के दौरान चतुर्थ समूह में जनसम्पर्क व्यवसायियों के लिए ग्लोबल फोरम फार पब्लिक रिलेशन द्वारा गोल्डन टैग़ल पब्लिक रिलेशन्स माडल: न्यू मंत्र फार एक्सीलेन्स इन पीआर विषय पर नेशनल राउण्ट टेबल ऑन पब्लिक रिलेशन्स कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से कोर पीआर मुख्य कार्यकारी अधिकारी चण्डीगढ़ के **सी.जे. सिंह, डा. संजीव भानावत, प्रो. के. सी मौलि, प्रो. अनन्य मेहता, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र. कु. शीलू,** मीडिया प्रभाग की जोनल कोआर्डिनेटर सिंकन्द्राबाद की **ब्र. कु. सरला आनन्द**, आन्ध्र प्रदेश सरकार की युथ सर्विसेस की संयुक्त निदेशक हैदराबाद की **मुमताज फातिमा** तथा इस कार्यक्रम के अध्यक्ष पीआर वाईस मैगेजिन के सम्पादक हैदराबाद के **डा. सी. वी. नरसिम्हा रेडडी** मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन ग्लोबल हास्पिटल की जनसम्पर्क अधिकारी तथा मासमीडिया की प्रबन्धक माउण्ट आबू की **ब्र. कु. बिन्नी** ने किया। *इसमें एक नये युग की स्थापना के लिए जनसर्म्पक में सुनहरे दृष्टिकोण पर खुलकर चर्चा की गयी तथा कहा गया कि जनसम्पर्क का कार्य महत्वपूर्ण कार्यों के साथ होता है। इसके लिए हमें अपने मनोवृत्ति और दृष्टिकोण को सकारात्मक और रचनात्मक बनाना होगा।*

समापन सत्र : दिनांक: 13 सितम्बर, 2009 को सायं 7 बजे **'जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिकता'** विषय पर समापन सत्र का आयोजन किया गया। इसमें विशिष्ट अतिथियों में भारतीय संचार संस्थान दिल्ली के पाठ्यक्रम निदेशक **शिवाजी सरकार**, ज्ञान सरोवर की निदेशिका **ब्र. कु. डा. निर्मला,** वैज्ञानिक एवं इंजिनियर प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक **ब्र. कु. मोहन**, अखिल भारतीय लघु समाचारपत्र के अध्यक्ष लखनऊ के **एस एस त्रिपाठी** ने सम्बोधित कर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी **दादी रतनमोहिनी** ने कार्यक्रम की सफलता पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि यह आने वाले स्वर्णिम युग का संकेत है कि इतनी संख्या में मीडियाकर्मियों ने इस मिशन में सम्मिलित होने की इच्छा जताई है। सकारात्मक समाचारों को महत्व देकर एक बेहतर विश्व की रचना की जाये यही हमारा संकल्प होना चाहिए। कार्य योजना मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक **ब्र. कु. सुशान्त** द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें कहा गया कि सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार माध्यमों की अत्यधिक प्रभावशाली *भूमिका होने के कारण विकास, सकारात्मक और मूल्यनिष्ठ समाचारों विचारों को अधिक स्थान दिया जाना चाहिए। यह जरूरी है कि मीडियाकर्मी पत्रकारिता के नैतिक सिद्धांतों, आचार संहिता, सत्यता और पारदर्शिता बनायें रखे। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज जैसे संगठनों का सहयोग करते हुए पत्रकारिता के नेटवर्किंग का विस्तार करना चाहिए। मीडियाकर्मियों ने महसूस किया कि वे अपेक्षाओं, दबाव, चुनौतियों, खतरों, प्रलोभनों व धमकी भरे वातावरण में कार्य कर रहे हैं। इसके मद्देनजर एक ऐसा वातावरण विकसित किया जाये जिससे आध्यात्मिक ज्ञान, बुनियादी मूल्य, सरल, सकारात्मक स्वस्थ जीवनशैली को अपनाना सम्भव हो सके। उन्हें आध्यात्मिक प्रशिक्षण दिया जाना* चाहिए। कार्यक्रम की सफलता के लिए धन्यवाद प्रस्ताव ओम शान्ति मीडिया के संयुक्त सम्पादक **ब्र. कु. गंगाधर** ने किया। कार्यक्रम का संचालन मीडिया प्रभाग की कार्यकारी सदस्य मुम्बई की **ब्र. कु. चन्दा** ने किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : कार्यक्रम के दौरान देशभर से आये कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। राधाकृष्ण अकादमी ऑफ फाईन आर्टस हुबली व राज इन्स्टीटयूट व नृत्यालय बैंगलौर के कलाकारों द्वारा मनभावन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए खूब तालियां बटोरी गयी। हैदराबाद से आयी एलिजाबेथ मोना की गजल गायन ने ऐसा समा बांधा कि झूम कर हम गा रहे है स्वागत नृत्य ने खूब प्रशंसा पायी। जयपुर की पूजा व रुद्रा शर्मा के राजस्थानी लोक नृत्य ने खूब रंग जमाया। हुबली के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नृत्यकला ने पूरे वातावरण को अध्यात्ममय बना दिया। बैंगलौर के राजू ने नटराज के तांडव नृत्य से सभी का मन मोह लिया। इस सुन्दर कार्यक्रम का संचालन माउण्ट आबू के कवि **ब्र. कु. विवेक** तथा अहमदाबाद की **ब्र. कु. नन्दिनी** ने किया।

इसके बाद देश भर से आये मेहमानों ने नये संकल्पों को साकार करने के उद्देश्यों से अपने-अपने स्थानों के लिए रवाना हो गये।